छूट दी जाती है, उसी तरह से बंधुवा मजदूरों को भी छूट दी जाएगी । मैं आप के माध्यम से यह भी बताना चाहता हूं कि जो राज्य अपने यहां से स्कीम नहीं भेज पा रहे हैं और उन को यदि स्कीम समझ में न आ रही हो और अगर वे केन्द्र से सहयोग चाहते हैं तो हम अपने यहां से एक अधिकारी भेज कर उन की सहायता कर सकते हैं ।

Malarial Mosquitoes

*166. SHRI SHAMBHU NATH CHATURVEDI: Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the malarial mosquitoes have developed immunity to medicines like chloroquinine as well as D.D.T. and other insecticides which are therefore proving ineffective in killing them and only contaminate the environment; and

(b) what steps are being taken to combat the recrudescence and spread of the disease?

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री जगदम्बी प्रसाद यादव) : (क) जी हां, भारत के कतिपय भागों में मलेरिया के मच्छरों की कुछ प्रजातियों में डी० डी० टी० और / अथवा बी० एच० सी० के सहन करने की शक्ति आ गई है । जहां कहीं भी यह सहन करने की समस्या पायी गई है वहां कीट विज्ञान और महामारी रोग विज्ञान दोनों की दृष्टि से प्रभावकारी वैकल्पिक कीटनाशक दवाइयां सप्लाई की जाती हैं । चूंकि राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के अन्तर्गत कीटनाशक दवाइयों का छिड़काव केवल घरों के अन्दर ही किया जाता है, इसलिए वातावरण के दूषित होने का प्रश्न नहीं उठता ।

मलेरिया के मच्छरों में क्लोरोक्विन के सहन करने की शक्ति का विकास होने का कोई प्रश्न नहीं है क्योंकि यह औषधि रक्त में मलेरिया के परजीवी को नष्ट कर मलेरिया के रोगियों को ठीक करने के लिए दी जाती है ।

(ख) इस रोग की रोकथाम के लिए भारत सरकार ने एक संशोधित कार्य योजना स्वीकृत की थी और देश में यह योजना 1-4-1977 से चलाई जा रही है । संशोधित योजना की मुख्य मुख्य बातों तथा मलेरिया के नियंत्रण के लिए किए गये अन्य उपायों का एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है ।

विवरण

संशोधित कार्य योजना की मुख्य-मुख्य बातें इस प्रकार हैं :—

1. राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम की वर्तमान यूनिट का जिले की भौगोलिक सीमा के अनुरूप पुनर्गठन किया गया है । पहले जिलों के मुख्य चिकित्सा अधिकारियों को इस कार्यक्रम में शामिल नहीं किया गया था लेकिन इन यूनिटों का पुनर्गठन हो जाने के कारण उन्हें जिले में इस कार्यक्रम के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार बनाया गया है ।

2. राज्यों को विभिन्न कीटनाशी दवाइयों डी० डी० टी०, बी० एच० सी० मलेथियन की अधिक मात्रा सप्लाई की गई है / की जा रही है । जहां रोग वाहकों पर डी० डी० टी० /बी० एच० सी० का कोई असर नहीं होता उन यूनिटों / जिलों को वैकल्पिक कीटनाशक दवाइयां भी उपलब्ध की जा रही हैं ।

3. उन सभी ग्रामीण क्षेत्रों में जहां प्रति हजार जनसंख्या के पीछे दो या इससे

अधिक रोगी हैं, कीटनाशी दवाइयों का छिड़काव किया गया है ।

4. राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों की सरकारों को मलेरिया रोधी दवाइयां पर्याप्त मात्रा में सप्लाई की गई हैं/की जा रही हैं। औषधियां आसानी से उपलब्ध करने के लिए लगभग 1.36 लाख औषधि वितरण केन्द्रों / ज्वर उपचार केन्द्रों की स्थापना कर दी गई है। जिन क्षेत्रों में परिजीवियों पर क्लोरोक्विन का कोई असर नहीं हुआ वहां पर कुनीन जैसी वैकल्पिक मलेरिया रोधी दवाई सप्लाई की गई है।

5. नगरीय मलेरिया कार्यक्रम के अन्तर्गत लार्वा-रोधी कार्यों को तेज कर दिया गया है। 1978 में इस योजना को वर्तमान 66 शहरों के अलावा 36 और शहरों में लागू कर दिया गया है।

6. क्षेत्रीय स्टाफ के निगरानी कार्य को तेज कर दिया गया है।

7. मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के क्षेत्र में सैद्धान्तिक और व्यावहारिक अनुसंधान करने के लिए कदम उठाये गये हैं। भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद् के तत्वाधान में 14 अनुसंधान योजनायें अर्थात् 8 आपरेशन अनुसंधान के लिए और 6 मलेरिया के प्रयोगशाला अनुसंधान के लिए आरम्भ की गई हैं।

8. ब्लड स्मीयरों का तत्काल परीक्षण तथा सक्रिय रोगियों पर तत्काल इलाज करने के लिए प्रयोगशाला सेवाओं को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र स्तर तक विकेन्द्रीकृत कर दिया गया है।

9. प्लासमीडियन फाल्सीफेरम के मण को, जिस के कारण मस्तिष्कीय मलेरिया हो जाने से मौत हो जाती है, फैलने से रोकने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन की सहायता से देश के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के राज्यों के 18 जिलों में सघन कार्यक्रम आरम्भ कर दिए गए हैं। यह कार्यक्रम 37 और जिलों में चालू किया जा रहा है।

10. रोग के बारे में स्वास्थ्य शिक्षा देने के लिए और इसके नियंत्रण के लिए जनता का सहयोग प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाए गए हैं :—

(i) क्लोरोक्विन की गोलियों के वितरण के लिए पंचायतों और स्कूल अध्यापकों को शामिल किया गया है।

(ii) दूर-दराज वाले पिछड़े क्षेत्रों में दवाइयों के डिपुओं को खोल दिया गया है। कुछ राज्यों में यह कार्य जनजाति कल्याण विभाग के सहयोग से किया गया है।

(iii) "दि थ्रेट" नामक एक फिल्म जो हाल ही में तैयार की गई थी उसे चौदह क्षेत्रीय भाषाओं में सारे देश में दिखाया जा रहा है।

(iv) इस आशय के पोस्टर "बुखार-मलेरिया हो सकता है—क्लोरोक्विन गोलियां लीजिए" पंचायतघरों, स्कूलों, प्राइमरी हैल्थ सेण्टरों और सब सब-सेण्टरों में प्रदर्शित करने हेतु राज्य सरकारों को सप्लाई किए गये हैं।

(v) क्षेत्रीय भाषाओं में "मलेरिया में क्या-क्या करना चाहिए" नामक एक पेम्पलेट भी तैयार किया गया है, जिसमें मलेरिया के लक्षणों, क्लोरोक्विन की मात्रा आदि का उल्लेख है और उसे पंचायतों, स्कूलों, अध्यापकों और अन्य स्वैच्छिक एजेन्सियों में वितरित करने के लिए राज्यों को सप्लाई किया गया है।

(vi) पंचायतों के अध्यक्षों और मंत्रियों को मलेरिया के बारे में विषय परिचायक प्रशिक्षण देने का भी विचार है।

(vii) चिकित्सा व्यावसायिकों के क्या-क्या कार्य होने चाहिए, इसके बारे में भी फोल्डर तैयार करके राज्यों को सप्लाई किए गए हैं ताकि वे उन्हें चिकित्सा व्यावसायिकों में बांट दें। इसी प्रकार एक और पेम्फलेट "मलेरिया फिर क्यों ?" भी तैयार किया गया है और उसे उपायुक्तों, मुख्य चिकित्सा अधिकारियों और खण्ड विकास अधिकारियों में बांटने के लिए राज्यों को सप्लाई कर दिया गया है ताकि उपर्युक्त अधिकारियों को मलेरिया सम्बन्धी मौजूदा समस्याओं और प्रस्तावित कार्यवाही करने के बारे में जानकारी दिलाई जा सके।

(viii) मलेरिया रोधी संदेश का प्रचार करने के लिए डाक और तार विभाग द्वारा विशेष पोस्टर स्टेशनरी रिलीज़ की गई है।

(ix) मलेरिया की रोकथाम तथा इसके इलाज के बारे में लोगों को जानकारी दिलाने के लिए आकाशवाणी तथा दूरदर्शन ने भी कार्यक्रम शुरू कर दिए हैं।

SHRI SHAMBHU NATH CHATURVADI: What has been the impact on the measures that have been taken for preventing the spread of the disease? May I know the comparative figures of seizures and deaths during the last two years?

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : श्रीमन्, 1977 में 62 मौतों की रिपोर्ट आई थी जिनमें से 52 का चेक-अप किया गया था। इस साल अंतिम रूप से पांच रिपोर्ट आयी हैं। श्रीमन्, ये मौतें असम में हुई हैं और फल्सीपर्म के कारण हुई हैं जो कि मस्तिष्क में होता है।

SHRI SHAMBHU NATH CHATURVEDI: I asked about the seizures also. Mere number of deaths does not indicate whether the measures that have been taken have been effective in preventing the spreading of the disease. In how many cases the measures that have been taken have been effective in preventing the spread of the disease?

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : श्रीमन्, जो कार्यक्रम हमारा है, उसकी सूची हमने दे दी है। अगर आप कहें तो हम उसको पढ़ सकते हैं और पढ़ कर बता सकते हैं।

1976 में 64 लाख, 68 हजार 215, 1977 में 46 लाख, 81 हजार 100 और 1978 में जून तक 6 लाख, 64 हजार 701 संख्या है।

श्रीमन् जो मेजर लिये गये वे यह है। पहली बार भौगोलिक दृष्टि से जिले को एक ईकाई मान कर चीफ मेडिकल आफिसर के ऊपर जिम्मेदारी डाली गई है। दूसरे डी०डी०सी० और बी०एच० सी० की अधिक आपूर्ति की गई है। जहां पर प्रति हजार आबादी पर दो केस होते थे, ऐसे 66 शहरों में पहले यह कार्यक्रम चलता था। अब 36 और शहरों में इस कार्यक्रम को बढ़ा दिया गया है।

जहां तक औषधि का सवाल है, इसको उपलब्ध कराने के लिए लगभग 1.36 लाख औषधि वितरण केन्द्रों/ज्वर उपचार केन्द्रों की स्थापना कर दी गई है।

MR. SPEAKER: My request to the Ministers is: answer the question, no policy statement or details. Otherwise, difficulty arises. Just answser the question.

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : श्रीमन्, मैंने पहले ही कहा था कि मैंने पालिसी स्टेटमेंट टेबल पर रख दिया है। इसीलिए

मैंने आपकी अनुमति चाही थी कि आप कहें तो उसे पढ़ दूं।

SHRI SHAMBHU NATH CHATURVEDI: Are there any peculiar features of the disease during the new outbreak? May I know whether infection from plasmodium falciparum is confined only to the eastern districts and deaths are not occurring on account of celebral malaria in other parts of the country and if so what action has been taken to prevent them?

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : श्रीमन्, इसका सब से पीक्युलर फीचर तो यही है कि मलेरिया का प्रकोप देश में फिर से बढ़ा है। इस साल मलेरिया के प्रकोप में किसी जगह डी० टी०सी० का रेजिस्टेंस हो गया, किसी किसी जगह पर बी० एच० सी० का रेजिस्टेंस हो गया। जहां डी० टी० सी० और बी० एच० सी० का रेजिस्टेंस होता है वहा मेरेथन देते हैं। जहां पर इन तीनों का रेजिस्टेंस है उस के लिए वर्ल्ड में कोई दवा नहीं बनी है। एकाध दवा जो बन रही है वह इतनी अपर्याप्त है कि उसका हम यहां उपयोग नहीं कर सकते।

दूसरे श्रीमन्, इन्होंने फल्सीपर्म का कहा। श्रीमन्, इसका प्रभाव पूर्वी क्षेत्र असम, मेघालय में है। वहां पर 18 जिलों में इस काम को इण्टेंसिव रूप से लिया गया है। जैसा कि हमने अभी बताया मस्तिष्क में इसके हो जाने के कारण वहां पांच मौतें हुई है। दूसरी जगह जो बचे हुए स्थान हैं उनमें इसके बारे में इंतजाम हो रहा है।

डा० कर्ण सिंह : अध्यक्ष महोदय, अपने उत्तर के पहले भाग में आपने कहा है कि जो स्प्रे होता है वह केवल घरों में किया जाता है और उससे वातावरण दूषित नहीं होता है। क्या घर के अन्दर का वातावरण वातावरण नहीं होता है? बड़ा आश्चर्यजनक आपने उत्तर दिया है। क्या घर के दमघोट वातावरण में बाहर का वातावरण स्वच्छ रहता है? इन दुष्ट कीटाणुओं का नाश करने के लिए, जिन्होंने कि देश को पीड़ित कर रखा है, कुछ इन्सेक्टिसाइड—जैसे डी० डी० सी०, बी० एच० सी०, मरथन है। जहां तक मुझे स्मरण है इन इन्सेक्टिसाइडस को हम विदेशों से मंगवाया करते थे क्योंकि हमारे देश में पर्याप्त मात्रा में इनका निर्माण नहीं हुआ करता था। मैं मंत्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि मलेरिया का जो पुनः प्रकोप हो रहा है, इसको देखते हुए क्या सरकार ने ऐसे कदम उठाये है कि डी० डी०टी०, बी० एच० सी० और मेरेथन का अपने देश में निर्माण हो? उस में क्या प्रगति हुई है और क्या अभी भी आप इनको विदेशों से मंगा रहे है या अपने ही देश में ये दवाएं बन रही है?

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : जहां तक मलेरिया के पुनः प्रकोप का सम्बन्ध है मैं समझता हूं कि डाक्टर साहब को इस की ज्यादा जानकारी होगी और शायद उनकी गैर-सावधानी के कारण ही यह बीमारी बढ़ी है —

श्री सौगत राय : एलीगेशन लगा रहे है।

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : एलीगेशन नहीं लगा रहा हूं। मैं आदरपूर्वक कहना चाहता हूं कि 1965 से 1976 के बीच जो कार्रवाई नहीं हुई उसकी रिपोर्ट मैं पढ़ दूं तो आपको इसका पता चल जाएगा। उसी कारण से इस बीमारी को बढ़ने का अवसर मिल गया है।

जहां तक दवाइयों का सवाल है हम कोशिश कर रहे है कि ये यहीं तैयार हो लेकिन स्थिति में सुधार ज्यादा नहीं हुआ है। खास कर मैलथियोन की कीमत ज्यादा पड़ती है और जितनी हमें चाहिए उतना उत्पादन नहीं होता है। इस वास्ते हमें विदेशों से और डब्ल्यू एच ओ की मदद से इसको मंगाने के लिए लाचार होना पड़ता है।

श्री एस० एस० सोलानी : नेशनल मलेरिया इराडिकेशन प्रोग्राम में मलेरिया की रोकथाम के काम पर करोड़ों रुपया खर्च किया जा चुका है । लेकिन फिर भी देश में से मलेरिया नेस्तोनाबूद नहीं हुआ है । जब डाक्टर से पूछते है कि सर्दी नहीं लगती है तो कैसे मलेरिया हो सकता है तो वह कहता है कि आजकल अडल्टैटिड मलेरिया हो गया है । क्या आप को पता है कि एडल्ट्रेटिव मलेरिया का इलाज अभी तक देश में कुछ नहीं निकला है जिस में हाथ पांव में जोरों से दर्द होता है और बुखार आता है ?

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : मलेरिया जिस भी प्रकार का हो उसका इलाज हमारे पास है और वह इलाज चल रहा है । माननीय सदस्य ने जो कहा है उसकी रिपोर्ट मेरे पास नहीं आई है । लेकिन कहीं-कहीं रिजिस्टेंस होता है अगर रिजिस्टेंस होने के बाद क्वीनीन की गोली और उसका इंजैक्शन देने से बह ठीक हो जाता है । ऐसी बात नहीं है कि किसी को मलेरिया हो और उसका इलाज हमारे पास न हो ।

MR. SPEAKER: Qn. No. 167.

SHRI BIRENDRA PRASAD: I want to know from the Chair.....

MR. SPEAKER: Nothing of that sort. I am not going to reply. You are not to question me here. You are only to question the Ministers.

DR. SUBRAMANIAM SWAMY: Why do you say, he is questioning you?

MR. SPEAKER: Some Members have a feeling that they have a right in every question.

(Interruptions)

MR. SPEAKER: Don't record.

(Interruptions) **

MR. SPEAKER: Qn. No. 167.

Thums UP

+

*167. SHRI R. L. P. VERMA:
SHRI K. LAKKAPPA:

Will the Minister of HEALTH AND FAMILY WELFARE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that his Ministry has asked the Delhi Bottling Company and Parle Beverages Private Limited, Bombay to desist from advertising their product 'Thums UP' as refreshing cola;

(b) if so, has any action being taken to prosecute the management of the Company; and

(c) if not, the reasons therefor?

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :) (क) जी, हां ।

(ख) और (ग) निर्माताओं से उत्तर मिलने पर ही आगामी कार्यवाही करने के बारे में विचार किया जाएगा ।

श्री रीत लाल प्रसाद वर्मा : जब सवाल दिया जाता है और जब उसका जवाब आता है उस बीच में काफी अन्तराल होता है । इस बीच में जो मैंने पूछा है कि इसका कारण क्या है उसका पता लग जाना चाहिए था ।

हर पेय जल के साथ कोला लगाने का आज फैशन सा हो गया है । कोका कोला तो चला गया है । लेकिन शीतल पेय निर्माता रिफ्रैशिंग कोला नाम दे कर जनता को चीट करते हैं, धोखा देते है । शीतल पेय वालों की तरफ से इस तरह से आम जनता को चीट करने की जो कार्रवाई हो रही है उसको ले कर क्या आप उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई करेंगे ? राज्य सभा में पांच मई को सरकार का जवाब था कि इस प्रकार की चीटिंग

**Not recorded.